पंचम अध्याय

उपसंहार

अनन्त गोपाल शेवड़े जी के 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों में प्रतिबिम्बित गांधी-विचारधारा के, पिछले अध्यायों में किये गये अनुशीलन के फलस्वरूप प्राप्त निष्कर्ष निम्नानुसार हैं।

साहित्यिक कृति के मूल्यांकन से पहले साहित्यकार के व्यक्तित्व के अध्ययन की समीचीनता तो स्वयंसिद्ध है। इसलिए प्रथम अध्याय में, शोध-प्रबन्ध-लेखक ने शेवड़े जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला है। शेवड़े जी के व्यक्तित्व के अनुशीलन से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उनका जीवन अंधेरे से प्रकाश की ओर यात्रा है। उनका बाल्यकाल सुख में बीता, परन्तु जैसे ही उनके पिताजी का देहान्त हुआ, उन पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। माताजी की सतर्कता तथा शेवड़े जी की कुछ नया पाने की जिज्ञासा के कारण उन्होंने अपनी शिक्षा पूरी की। फिर भी, देशप्रेम की भावना ने उनकी इस जिज्ञासा को अखण्ड नहीं रहने दिया। फलतः उन्होंने बीच में ही कॉलेज छोड़ दिया और स्वतंत्रता-आन्दोलन में शरीक हुए। विवाह से पूर्व उनकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर थी ही, विवाहोपरान्त भी उसमें अधिक परिवर्तन नहीं आया। पत्नी के सहयोग तथा सतत् परिश्रम के कारण शेवड़े जी अनेक संस्थाओं में कार्य कर सके। आन्दोलन के सिलसिले में उन्हें कितने ही कष्ट उठाने पड़े, जेल जाना पड़ा, फिर भी उनकी राष्ट्रनिष्ठा कम होने के बजाय दिनों दिन बढ़ती ही गई।

जीविका के लिए शेवड़े जी ने पत्रकारिता का साधन चुना था, पर इसे मात्र जीविका का साधन मानना उनके साथ अन्याय करना होगा। वे पत्रकारिता को प्रबोधन एवं समाज-जागृति का सशक्त हथियार मानते थे। हिन्दी भाषा एवं साहित्य के लिए शेवड़े जी ने क्या कुछ नहीं किया था ? उनका सारा जीवन हिन्दी भाषा एवं साहित्य को समृद्ध करने बीता। भारतीय संस्कृति के मूलभूत मूल्यों में उनकी असीम आस्था थी। मानव की जिजीविषा में उनका विश्वास था तथा उसकी दुर्बलताओं के प्रति उनके मन में अपार सहानुभूति थी। अपने जीवन में उन्हें अनेक संघर्षों से जूझना पड़ा। संघर्षों की इस प्रखर ज्वाला में शेवड़े जी भस्म नहीं हुए, बल्कि सोने की तरह और अधिक निखर उठे।

शेवड़े जी महात्मा गांधी जी के व्यक्तित्व एवं विचारों से अत्यधिक प्रभावित थे। पूरा शेवड़े-परिवार गांधी जी के प्रति समर्पित होने के कारण बचपन से ही शेवड़े जी के मन में

गांधी जी के प्रति आकर्षण था। युवावस्था मे उन्होंने जब गांधी जी के भाषण सुने तथा उनके विचार पढ़ें , तब गांधी जी के प्रति उनकी आस्था अधिक दृढ़ हो गई। कॉलेज का बहिष्कार कर स्वतंत्रता-आन्दोलन में हिस्सा लेना इसी का परिणाम था। उनके व्यक्तित्व में निहित सादगी, पत्रकारिता, राष्ट्रभाषा-प्रेम तथा उनकी रचनाओं में झलकने वाला मान॰॰वाद आदि पर गांधीवाद का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। गांधी-जयंति जैसे समारोह का आयोजन तथा भारतीय संस्कृति में होने वाली शेवड़े जी की असीम आस्था आदि बातें भी उनके गांधीवादी होने का स्पष्ट संकेत देती हैं। गांधी तथा गांधीवाद के प्रति निष्ठा का यह पहलू उनके व्यक्तित्व का श्रेष्ठतम पहलू है, क्योंकि अन्य सभी छोटे-बड़े पहलू अन्ततः इसी में आकर मिल जाते हैं। साहित्यकार, पत्रकार, राष्ट्रभाषा-प्रेमी तथा स्वतंत्रता-सेनानी आदि विभिन्न पहलुओं के मूल में गांधीवाद रहा है।

शेवड़े जी के अब तक प्रकाशित मौलिक हिन्दी साहित्य का सिंहावलोकन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आधुनिक प्रेमचन्दोत्तर कालीन हिन्दी साहित्य में शेवड़े जी का स्थान अक्षुण्ण है। लेखन की वृत्ति उनमें बचपन से ही पायी जाती है, जो धीरे-धीरे विकसित होती हुई नजर आती है। व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति ही तो साहित्य है। शेवड़े जी के समस्त हिन्दी साहित्य में उनका व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित हुआ है। तत्कालीन परिस्थितियों के उन पर पड़े प्रभाव के कारण उनके उपन्यासों पर गांधीवाद का प्रभाव परिलक्षित होता है। यह प्रभाव उनके उपन्यासों की रीढ़ की हड्डी है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों पर गांधीवाद का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है। शेवड़े जी ने उपन्यास, कहानी, निबन्ध तथा यात्रा-वर्णन आदि विभिन्न क्षेत्रों में लेखन कर अपने कृतित्व को बहुआयामी सिद्ध किया है। शेवड़े जी का व्यक्तित्व तथा कृतित्व इस बात का साक्षी है कि वे केवल गांधी-युग के अनुकूल साहित्यकार ही नहीं है, तो युग के प्रकाशस्तंभ बन गये हैं।

द्वितीय अध्याय में, गांधीवाद की व्याख्या प्रस्तुत करते हुए आध्यात्मिक, आचार-विषयक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आदि पाँच भागों मे गांधीवाद का स्वरूप स्पष्ट किया है, जिसमें केवल उन्ही तत्त्वो को प्रमुखता दी है, जिनकी अभिव्यक्ति विवेच्य उपन्यासों में विशेष रूप से हुई है। साथ ही कला, साहित्य तथा संस्कृति के सम्बन्ध में गांधी जी के विचारों पर भी प्रकाश डाला है। गांधीवाद के सम्यक अध्ययन के पश्चात्

शोध-प्रबन्ध-लेखक इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि यह विचारधारा भारतीय संस्कृति की ही उपज है। महात्मा गांधी जी का व्यक्तित्व भारतीय संस्कृति का निचोड़ है। गांधी जी का व्यक्तित्व एवं उनकी जीवन-दृष्टि इतनी विशाल थी कि समकालीन जीवन का प्रत्येक पक्ष उनसे किसी-न-किसी रूप में अवश्य प्रभावित हुआ है। कला और साहित्य भी इससे अछूते नहीं रहे हैं। गांधीवाद की सब से बड़ी देन साधन-शुचिता है। सत्य एवं अहिंसा गांधीवाद के मूल स्तम्भ हैं। सर्वोदय गांधी जी का सामाजिक आदर्श है, सत्याग्रह जीवनादर्श है और रामराज्य शासनादर्श है। गांधी जी के जीवनादर्श में त्याग और तप का पाधान्य है तथा भोग का तिरस्कार। कला में भी उन्होंने सत्यं, शिवं और सुन्दरं पर ही बल दिया है। यद्यपि गांधीवाद के पीछे मार्क्सवाद के समान कोई शास्त्रीय अध्ययन नहीं है, फिर भी यह मनुष्य-जीवन के निकट है और उसकी इर समस्या का समाधान करने का प्रयास करता है।

गांधी जी के सिद्धान्तों का सम्बन्ध प्रत्यक्ष जीवन से है। विभिन्न विद्वानों की 'गांधीवाद' की परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि गांधीवाद 'गांधी जी की जीवन-दृष्टि' का ही नाम है। बीसवीं शताब्दी के जिन चिन्तकों ने विश्व की चिन्तनधारा को प्रभावित किया और जीवन को नया मोड़ देने का प्रयत्न किया, उनमें डार्विन, मार्क्स और फ्रायड़ से भी बढ़ कर महात्मा गांधी का नाम अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। गांधी जी ने अपने जीवन को जिन नियमों और धारणाओं के सांचे में ढाला था, उनके अनुसार ही उनका आचरण रहा। निस्संदेह गांधीवाद का आधुनिक युग में विशेष महत्त्व रहा है। आज की युद्ध व संघर्ष की भयावह विभीषिका से संत्रस्त विश्वमानव को गांधी-दर्शन अभय देता है। गांधी-विचारधारा का प्रत्येक तत्त्व मानवता का आधार-स्तंभ है।

मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास तथा साहित्यिक कृति की यथार्थता के लिए युगीन वातावरण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। इसलिए तृतीय अध्याय में, 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में प्रतिबिम्बित गांधीकालीन तथा गांधीवधोत्तर कालीन वातावरण का अनुशीलन किया है। इस अनुशीलन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में क्रम से गांधीकालीन और गांधीवधोत्तर कालीन वातावरण को सजीवता से प्रस्तुत करने में शेवड़े जी को सफलता मिली है।

युग-चेतना साहित्य-सृजन में प्रेरणा का कार्य करती है। शेवड़े जी भी युग-चेतना-सम्पन्न साहित्यकार हैं। उनका सृजन-काल भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम एवं स्वातंत्र्योत्तर काल रहा है। उन्होंने स्वयं स्वतंत्रता-आन्दोलन में सक्रिय हिस्सा लिया था। स्वातंत्र्योत्तर कालीन राजनीति से भी वे भली-भाँति परिचित थे। अतः वे राष्ट्रीय आन्दोलनों एवं स्वातंत्र्योत्तर कालीन परिस्थितियों से कैसे अछूते रह सकते थे ? अपने इन्हीं अनुभवों के बल पर ही उन्होंने हिन्दी साहित्य को 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' नामक दो श्रेष्ठ उपन्यास दिये हैं। 'ज्वालामुखी' उपन्यास स्वतंत्रता-पूर्व कालीन भारतीय परिवेश पर प्रकाश डालता है। इस काल में गांधी जी के विचार किस प्रकार सामान्य जनता तक पहुँच चुके थे तथा किस प्रकार जनता उन विचारों का समर्थन करते हुए स्वतंत्रता-आन्दोलन में कूद पड़ती थी, यह दिखाने में उपन्यासकार सफल हुए हैं। 'भग्नमन्दिर' उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर कालीन भारतीय परिवेश पर प्रकाश डालता है। इस काल में गांधी जी एवं उनके विचारों का किस प्रकार पतन हो रहा है तथा कुछ इने-गिने लोग किस प्रकार गांधी जी के विचारों को पुनः प्रस्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं, यह दिखाने में उपन्यासकार को सफलता मिली है।

विवेच्य दोनों उपन्यास राजनीतिक होने के कारण उनमें युगीन राजनीतिक वातावरण को प्रमुखता मिली है। राजनीतिक उपन्यासों में स्थल-काल की एकता, दृश्यों का सजीव अंकन एवं तत्कालीन बोध का असाधारण महत्त्व होता है। उपन्यासकार शेवड़े जी इन सब बातों के प्रति सतर्क रहे हैं। राजनीतिक वातावरण का चित्रण करते समय उन्होंने ऐतिहासिक तथ्यों को नजर अंदाज नहीं किया है। अपने उपन्यासो में राजनीतिक समस्याओं का चित्रण करते समय शेवड़े जी ने उसका कलात्मक उपयोग किया है। उन्होंने कहीं भी राजनीति को नारे या प्रचार के रूप में नहीं ग्रहण किया है। स्वतंत्रता-पूर्व काल में देश की राजनीतिक चेतना गांधी जी में समाई थी। तत्कालीन प्रत्येक क्षेत्र पर गांधी जी का प्रभाव दिखाई देता है। 'ज्वालामुखी' में इन सब का सुन्दर निर्वाह हुआ है। स्वातंत्र्योत्तर काल में गांधीवाद धीरे-धीरे लुप्त होने लगा। गांधी-तत्त्वज्ञान केवल भाषणबाजी में ही रहा। देशी नेताओं की कथनी और करनी में पर्याप्त अंतर दिखाई देने लगा। केवल अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए गांधी जी का उपयोग करने वाले अनेक छद्म गांधीवादी नेताओं का निर्माण हुआ। परिणामस्वरूप देश में चारों ओर भ्रष्टाचार और अनाचार फैल गया। इन बातों का यथार्थ चित्रण 'भग्नमन्दिर'

में हुआ है। अतः राजनीतिक उपन्यासकार के रूप में शेवड़े जी एक सफल कलाकार सिद्ध होते हैं।

राजनीतिक वातावरण के साथ ही विवेच्य उपन्यासों में शेवड़े जी ने युगीन सामाजिक, आर्थिक तथा धार्मिक वातावरण का भी सफलता से अंकन किया है। निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि 'ज्वालामुखी' में गांधीकालीन तथा 'भग्नमन्दिर' में गांधीवधोत्तर कालीन वातावरण का वास्तविक चित्रण हुआ है।

चतुर्थ अध्याय में, 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' उपन्यासों के प्रमुख गांधीवादी चरित्रों का परिचय दिया है और उसके पश्चात् गांधी-दर्शन के मूल तत्त्वों के आधार पर उनमें प्रतिबिम्बित गांधी-तत्त्वों का अनुशीलन किया है। इस अनुशीलन के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि दोनों भी उपन्यास पूर्णतः गांधीवादी हैं। दोनों उपन्यासों के प्रमुख पात्रों पर गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। खुद शेवड़े जी पर गांधीवाद का प्रभाव होने के कारण अपने उपन्यासों में वे गांधीवादी चरित्रों का सजीव चित्रण कर सके हैं। छद्म गांधीवादी चरित्रों के चित्रण में भी उन्हें सफलता मिली है।

विवेच्य उपन्यासों में उपन्यासकार ने गांधीवादी आध्यात्मिक विचारधारा के साथ-साथ आचार-विषयक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विचारधारा को भी सफल अभिव्यक्ति दी है। -

१) आध्यात्मिक विचारधारा -

आध्यात्मिक विचारधारा के अंतर्गत सत्य और अहिंसा का समावेश होता है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में शेवड़े जी ने इन दोनों तत्त्वों को सफलता से अभिव्यत किया है । 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार, रामनाथ, सोनादर्जी, विजया, अभय की माता, दीनबन्धु तथा उसकी पत्नी लक्ष्मी आदि चरित्र सत्यवचनी और अहिंसावादी है। 'भग्नमन्दिर' का धनंजय सत्य की प्रतिमूर्ति है। धनंजय का मित्र भोलानाथ भी हमेशा सत्य का पक्ष लेता हुआ दिखाई देता है। 'भग्नमन्दिर' में एक स्थान पर शेवड़े जी ने अहिंसा की भी चर्चा की है।

२) आचार-विषयक विचारधारा -

आचार-विषयक विचारधारा के अंतर्गत गांधी जी ने प्रार्थना-उपासना तथा व्रत प्रतिज्ञा के साथ-साथ नैतिक नियमों की भी चर्चा की है। विवेच्य दोनों उपन्यासों के प्रमुख चरित्र

प्रार्थना-उपासना में आस्था व्यक्त करते दिखाई देते हैं। साथ ही वे ब्रह्मचर्य, स्वदेशी, शरीर-श्रम, अपरिग्रह तथा अभय आदि व्रतों का पालन करते हुए भी दृष्टिगत होते हैं। गांधीवाद के प्रभाव के कारण इन उपन्यासों में कर्म-सिद्धान्त की भी अभिव्यक्ति हुई है। 'ज्वालामुखी' का अभयकुमार स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए, तो 'भग्नमन्दिर' का धनंजय गांधीवाद की पुनः प्रतिष्ठा के लिए निरन्तर कर्मरत रहते हैं। अपने पात्रों के द्वारा शेवड़े जी नैतिकता का प्रचार-प्रसार करने में सफल हुए हैं।

३) सामाजिक विचारधारा -

विवेच्य दोनों उपन्यासों में शेवड़े जी ने सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए गांधी जी के समाजलक्षी विचारों को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया है। गांधी जी की तरह शेवड़े जी भी सांप्रदायिक एकता, सफाई-सादगी, शराब-बन्दी, सेवा, स्त्रियों की उन्नति तथा विभिन्न क्षेत्रों में उनके सहभाग के पक्षपाती थे। समाज के सुन्दर स्वास्थ्य के हेतु वे मादक वस्तुओं के निषेध पर बल देते हैं। अपने पात्रों के माध्यम से उन्होंने इन्हीं गांधीवादी तत्त्वों को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है।

४) आर्थिक विचारधारा -

'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में गांधी जी के आर्थिक विचारों की भी अभिव्यक्ति हुई हैं। 'भग्नमन्दिर' उपन्यास में गांधी जी के ट्रस्टीशिप के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया गया है। 'ज्वालामुखी' में ग्रामीण उद्योग-धंदों के प्रचार द्वारा शेवड़े जी ने गांधी जी के आर्थिक विचारों का प्रतिपादन किया है।

५) राजनीतिक विचारधारा -

अपने राजनीतिक तथा सामाजिक उद्दिष्ट की पूर्ति के लिए गांधी जी ने सत्याग्रह के अस्त्र का प्रयोग किया था। शेवड़े जी गांधी जी के राजनीतिक विचारों से भी प्रभावित थे। अतः उन्होंने विवेच्य दोनों उपन्यासों में सत्याग्रह की महिमा का वर्णन किया है। 'ज्वालामुखी' के अभयकुमार तथा 'भग्नमन्दिर' के धनंजय में सत्याग्रही के समस्त गुण मिलते हैं। इन उपन्यासों में शेवड़े जी ने गांधी जी के हृदय-परिवर्तन सिद्धान्त का भी प्रतिपादन किया है।

गांधी-दर्शन से प्रभावित होकर ही शेवड़े जी ने अपने उपन्यासों में कर्मयोग की स्थापना की है। इस प्रभाव के फलस्वरूप ही उन्होंने मानवता का जीवनादर्श उपस्थित करते हुए

भारतीय संस्कृति की व्यापकता, महत्ता तथा विशालता का परिचय करा दिया है। साहित्य की भाषा के क्षेत्र में भी शेवड़े जी गांधी जी से प्रभावित दिखाई देते हैं। गांधी जी ने अपनी साहित्य-विषयक विचारधारा में भाषा की सरलता पर जोर दिया है। शेवड़े जी ने भी अपने उपन्यासों में सीधी-सादी, सरल तथा सुगम भाषा का प्रयोग किया है। 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' में भी भाषा का वही रूप दिखाई देता है।

इस प्रकार शेवड़े जी के 'ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' इन दो प्रमुख गांधीवादी उपन्यासों का अनुशीलन करते समय जो तथ्य हाथ लगे, उन पर प्रकाश डाला है।

विवेच्य उपन्यासों में उपन्यासकार ने कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं परोक्ष रूप में गांधी-दर्शन को अभिव्यक्ति दी है। गांधी-दर्शन की अभिव्यक्ति जहां परोक्ष रूप में हुई है, वहां उपन्यासों का साहित्यिक मूल्य अक्षुण्ण रहा है, लेकिन जहां उपन्यासकार प्रत्यक्ष रूप से गांधी-दर्शन का प्रचार करने लगते हैं, वहां कलात्मकता को अवश्य बाधा पहुँची है। फिर भी, गांधी-विचारधारा को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने में शेवड़े जी सफल हुए हैं। प्रस्तुत उपन्यासों पर प्रचारात्मकता का आरोप लगाना सर्वथा अनुचित है, क्योंकि जिस साहित्य में जीवन के शाश्वत सत्य, मान्यताएं, कल्पनाएं तथा आकांक्षाएं अभिव्यक्त हुई हैं, वह चिरन्तन साहित्य कहलाने का अधिकारी है। साहित्य पर किसी भी विचारधारा का प्रभाव क्यों न हो, यदि उसमें ये मूल तत्त्व और लोक-मंगल की भावना निहित है, तो उसे प्रचारात्मक साहित्य कदापि नहीं कहा जा सकता है। शेवड़े जी एक मानवतावादी कलाकार हैं। गांधी-विचारधारा का प्रभाव ग्रहण करते हुए उन्होंने युगीन समस्याओं को साहित्यिक अभिव्यक्ति दी है और उनका समाधान भी प्रस्तुत किया है। जीवन के शाश्वत मूल्यों का उद्‌घाटन कर मानवता की प्राण-प्रतिष्ठा करना ही शेवड़े जी के गांधीवादी उपन्यासों का परम लक्ष्य रहा है।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि ' ज्वालामुखी' तथा 'भग्नमन्दिर' शेवड़े जी के प्रमुख गांधीवादी उपन्यास हैं। इन उपन्यासों में उपन्यासकार ने स्पष्ट रूप से गांधीवादी आदर्श की घोषणा की है। गांधीवाद को साहित्यिक अभिव्यक्ति देने में यहां उपन्यासकार सफल हुये हैं। शेवड़े जी के अन्य उपन्यासों पर भी गांधीवाद का प्रभाव दिखाई देता है। गांधीवाद के परिप्रेक्ष्य में उन उपन्यासों का अनुशीलन आगामी शोध-कार्य का प्रस्थान-बिंदु होगा।